कहानी

चल री कमली

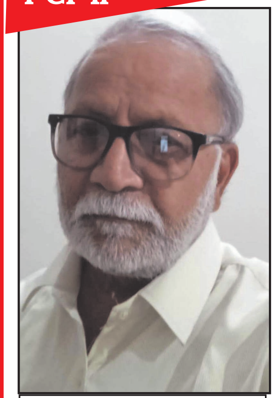

नरेश कानूनगो

कमली बोलती बहुत है और ये ज्यादा बोलना ही उसे मुसीबतों में डालता है. उसे किसी से भी बात करने में कोई झिझक नहीं लगती है सामने चाहे कोई पुरुष हो या फिर कोई महिला. एक बार वह बोलना शुरू कर दे तो उसे चुप कराने के लिये सामने वाले को उसके हाथ जोड़ने पड़ते हैं. यूं तो कमली की उम्र छब्बीस सत्ताईस के आसपास है नैन नक्श अच्छे हैं थोड़ी सी काली भी है परंतु उसकी लंबाई औसत से कम होने से कोई भी उसे अठारह उन्नीस से ज्यादा नहीं समझेगा.

गांव छोड़ कर, चार पैसे कमाने उसका मरद शहर में आया था पर तकदीर में आगे क्या लिखा था ना कमली को मालूम था और ना ही उसके मरद को. जहां दोनों मजदूरी करते थे उस दिन ढली हुई छत का स्लेब, नीचे काम कर रहे मजदूरों पर भरभरा कर सिर पर आन गिरा. कुछ की जान बच गयी तो कुछ, वहीं के वहीं भगवान को प्यारे हो गये उनमें कमली का आदमी भी था. भगवान की अजब लीला थी आदमी तो चला गया पर कमली रह गयी निपट अकेली, गुमसुम सी, मानो उसकी जुबान पर किसी ने ताले लगा दिये हों.

आगे की जिंदगी को जीने के लिए काम तो कोई ना कोई करना ही था सो एक परिचित के कहने पर एक नामी तेल बनाने वाली कंपनी मे जा कर नौकरी करने की फरियाद की. उसमें काम करने वाली अधिकांश महिलाएं ही काम करती थी पेकिंग का काम था जो ठेकेदार के अधीन था सो उसे भी काम पर आने का हाँ कर दिया गया. अगले दिन से कमली भी काम पर जाने लगी. ठेकेदार के चार - पांच आदमी कंपनी मे घूमते रहते और काम करती महिलाओं पर नजर रखते. सुबह काम पर गयी कमली शाम ढले वापस लौटती, थकी - हारी कमली चार रोटियाँ सेंकती, सब्जी मे तड़का लगा, रोटी सब्जी खा कर जो सोती तो अगली सुबह ही उठती. फिर जल्दी जल्दी सुबह के सारे घर के काम निपटा पहुँच जाती कम्पनी में. कंपनी के आदमी पूरे दिन काम करती महिलाओं के साथ बात - बात में चुहलबाजी करते रहते. उन्हीं मे से एक सुंदर नाम का आदमी कमली से ज्यादा ही बात करने की कोशिशें करता.

किसी दिन कहता कमली तू मुझे अच्छी लगती है तो किसी दिन कहता मैं तुझे पसंद करने लगा हूँ. कमली उसकी बातों को सुना अनसुना कर चुपचाप अपना काम करती रहती. और उस दिन तो हद हो गयी सुंदर ने उसका हाथ ही पकड़ लिया और कहने लगा कमली ! तू मुझसे शादी कर ले. कमली भरी बैठी थी मारे गुस्से के उसने नीचे पड़ी ईंट उठाई और दे मारी सुंदर के माथे पर. खून की धार फूट गयी उसके माथे से. पूरी कंपनी में हंगामा हो गया कमली ने सुंदर को मार दिया.

बेबाक कमली भी कहां डरने वाली थी ईंट उठाये वो कंपनी से बाहर निकल पहुँच गयी अगले चौराहे पर स्थित औद्योगिक क्षेत्र के पुलिस थाने में. वहां के पुलिस वाले को उसने रपट लिखने का बोला और कहने लगी कि कंपनी में सुंदर नाम का आदमी मुझ से रोजाना छेड़छाड़ करता है सो उसको सबक सिखाने के लिये आज मैंने उसे ईंट से दे मारा. सुंदर को भी थाने बुलाया गया उससे बात की गयी उसकी हरकतों की वजह से उस पर महिला को प्रताड़ित करने का केस लगा अंदर कर दिया गया. ठेकेदार का नाम खराब हुआ सो अलग तो उसने कमली को काम पर आने से मना कर दिया.

कमली का काम पर जाना बंद हुआ तो उसके सामने समस्या आ गयी अब क्या किया जाये? घर के पास की चार छः कालोनियों के चक्कर लगाये तो चार - पांच घरों मे बर्तन साफ करने और झाड़ू - पोंछे के काम मिल गये. ईमानदारी और साफ - सफाई का काम करने की वजह से जिन घरों में वह काम पर जाने लगी उनकी मालकिंनें उससे खुश थी. कोई उसे दिन का खाना खिला देती तो कोई शाम की चाय पिला देती.

अब कमली की जिंदगी मे थोड़ा सुकून सा रहने लगा है. चारों - पाँचों घरों से हर महीने उसे समय पर उसका जो मेहनताना मिल जाता है उस जैसी निपट अकेली जान के लिए पर्याप्त से भी अधिक होता है. आजकल सुबह निकली थकी मान्दी कमली शाम ढले घर वापस पहुंचती है पर सोती वह बेफिक्री की नींद है यही उसकी दिनचर्या बन गयी है.

ग़ज़लें

गोविन्द सेन

(1)

हमेशा नदी ने समन्दर पुकारा
हरे पेड़, पर्वत सभी को बिसारा

मुझे याद आया, तुम्हें याद आया,
कहीं दूर का था ये नाता हमारा

हमीं हम नहीं हैं, तुम्हीं तुम नहीं हो,
ज़रा तुम समझ लो समय का इशारा

चलो मानते हैं ये दुनिया बड़ी है,
मिलोगे नहीं क्या दुबारा-तिबारा

लहू लाल तेरा, लहू लाल मेरा,
न शैतान जीता, न इंसान हारा

न सोचा कभी था, महल ध्वस्त होगा
समय मारता है यूँ चाँटा करारा

नहीं एक तिनका अभी तो नज़र में,
कभी तो किसी का मिलेगा सहारा

(2)

धरा पर चाँद लाएंगे
यही सपना दिखाएंगे

कभी आँखें बताएंगे
कभी आँखें चुराएंगे

हमारी जेब का पैसा
हमीं पर ये लुटाएंगे

हमीं को देंगे ये फांसी
हमें जीना सिखाएंगे

न इनकी बात में आना
यही तो जुल्म ढाएंगे

सभी को तो डुबाते हैं,
हमें भी ये डुबाएंगे

कविता

कमजोर होती धरती...

विक्रम सिंह

मैं जिस सड़क पर चलता हूँ
वो बहुत उबड़-खाबड़ है,
कमज़ोर, दुबली-पतली,
जो नहीं सह पाती किसी भारी वाहन का बोझ।

मैं जिन पेड़ों की हवा लेता हूँ,
उनके पत्ते हैं मुरझाए,
तने इतने पतले कि
तेज़ आँधी आते ही टूट जाते हैं।

मैं जिन नदियों का पिता हूँ,
उनका पानी अब आधा सूख गया है,
जो बचा है, वह भी मटमैला,
थोड़ी-सी केमिकल की मात्रा से ही मरता हुआ।

मैं जिस पृथ्वी में रहता हूँ,
वहाँ के इंसान हो गए हैं
दुर्बल,
जरा-सी
तकलीफ़
से काँप
उठते
हैं।
धरती
बीमार है,
क्योंकि उसके पेड़, सड़कें,
और नदियाँ बीमार हैं।

और जब धरती के ये अंग ही कमजोर होंगे,
तो उसके वंश का मिट जाना स्वाभाविक है।
एक दिन यह पृथ्वी भी
अपनी सड़कों, पेड़ों, नदियों और इंसानों से खाली हो जाएगी।
और तब यह भी
सिर्फ एक उपग्रह बनकर रह जाएगी—
चाँद या सूरज की तरह,
निर्जीव, दूर और
मौन।

क्लास by बड़े भाई

तुलना में पीड़ा है...

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, कुछ न होने के दुःख पर तो चलिए,संतोष किसी तरह काबू पा भी लेता है लेकिन कुछ होने पर उसकी दुनिया भर से तुलना में जो दुःख होता है उस पर काबू पाना थोड़ा कठिन हो जाता है।

मेरे परिचय में एक सज्जन रहते हैं। उनका एक स्थायी दुख है कि वो जो कुछ बाज़ार से लाते हैं, हमेशा उसको लाने के बाद उन्हें पता चलता है कि उन्होंने जो लिया है उससे बढ़िया उनके पास के मित्र के पास है। यह हमेशा ही उनकी ख़ुशी पर पानी फेर देता है और बेचारे उस सामान को अपमान का घूंट पीना पड़ता है।

छोटे भाई, ऐसा नहीं है कि उनका काम नहीं होता या उनका सामान खराब होता है बस उनके पास जो कुछ भी होता है वो उसको तराजू में लेकर दुनिया के सामने बैठ जाते हैं और जब आप तराजू में लेकर बैठते हैं तो कहीं आपका पलड़ा भारी होता है तो कहीं आप पर भारी पड़ जाता है और आपके भीतर की शांति इस तराजू की कठपुतली बनकर रह जाती है और फिर इस तुलना में पलड़ा भारी करने की होड़ में हम अपनी आय और खर्च का संतुलन भी खो बैठते हैं।

यह तो मैंने किसी सामान को लेकर तुलना की बात की । बाकी लोग अपने बच्चों की तुलना भी यहां वहां आस पड़ोस रिश्तेदारों के बच्चों से करते रहते हैं।

छोटे भाई, हमें सदैव सिखाया गया है कि जो प्राप्त है पर्याप्त है। यही भाव ही हमें खुश रख सकता है। दुनिया से तुलना करने बैठेंगे तो सब कुछ ही आपको कमतर दिखेगा और इससे आप कभी जीत नहीं पाएंगे। इससे आपके हिस्से बेचैनी और उदासी ही हाथ लगेगी।

छोटे भाई, जो आपके पास है वो यकीन मानिए, बहुतों के पास नहीं है। अपने पास जो है उससे प्रेम करिए। इस तुलना की आदत से अपने आपको बचाकर रखिए। यह कभी आपको प्रसन्न नहीं रहने देगी। जो है उसका खूब आनंद लीजिए।

बस यही कहना था, धन्यवाद।।

लघुकथा

विश्वास

मंजुला भूतड़ा

सुबह से खूब तैयारियां चल रही हैं. सबको क्रिकेट का एक दिवसीय फाइनल मैच देखना है. सभी को क्रिकेट का बहुत क्रेज है और फिर जब भारत-पाकिस्तान का मैच हो तब तो सारे देश का ही माहौल उत्सवी हो जाता है. अभय तो जैसे क्रिकेट का दीवाना है, खेलता भी बहुत अच्छा है. घर में भी सब लगे हुए हैं.

बच्चों के लिए पिज़्ज़ा, कोल्ड-ड्रिंक का आर्डर कर दिया गया है, बडों को सब्जी पूड़ी खाने का मन है वह भी बनाकर रख दी है. फिर नमकीन तो सभी को चाहिए.

इतने में मोनू बोली,मैं तो पानी का जग भी भरकर रख लेती हूं. क्यों मम्मी मिठाई भी है न? यानि सब तैयार हैं, टॉस का भी समय हो गया. और लो, भारत ने टॉस जीत लिया. भारत ने बोलिंग आप्शन चुना. पाकिस्तान की बैटिंग शुरू में तो अच्छी रही पर फिर विकेट भी फटाफट गिरने लगे और खिलाड़ी कोई बहुत अच्छा स्कोर नहीं कर पाए. अब भारत की बैटिंग थी सब उत्साहित थे पर अनिश्चितताओं के इस खेल में हमेशा ही रोमांच बना रहता है. दिग्गज खिलाड़ी जल्दी आउट होकर चले गए पर मध्यक्रम के बल्लेबाजों ने अच्छी पारी खेली और भारत को जीत के पास पहुंचा दिया. अजय समझ रहा था कि अभय तो कहीं दोस्तों के साथ क्रिकेट देख रहा होगा. इतने में ही उसे घर के अन्दर कुछ आहट सुनाई दी. उसने जाकर देखा कि अभय तो कोई उपन्यास पढ रहा है. वह बोला, भाई क्या हो गया, मैच नहीं देख रहे.

अरे हां, बता न क्या हुआ मैच में अभय ने पूछा. जीत गया भारत पर भाई, तुम क्या भूल गए थे? नहीं यार, भूला नहीं. अक्सर न जब मैं मैच देखता हूं तो इंडिया हार जाती है! इसीलिए मैं मैच देखने ही नहीं आया.

सब विस्मय से देख रहे थे ..अभय के विश्वास को!

मालवी कोना

प्याज-लहसुन की तामसिक महिमा

भावेश कानूनगो

प्याज अने लसुन की महिमा बड़ी निराली हे. यी दोई असा महामानव हे जेका बिना रसोई अधूरी हुई जाय हे . जिनने इनके एक बार स्वाद में शामिल करि लियो, इनका बिना भोजन वसो ही लगे हे जसे ब्याव में डीजे तो हो, पण नाचने वालो कोई पावणो नी हों. हर घर में भोजन का स्वाद की चर्चा इनी दोई महापुरुषों का अई-वई घूमिया करे हे. कदी सब्ज़ी बेस्वाद हुई जाए, तो दोष नमक मिर्च को नी रे, प्याज-लसुन को नी होना ठहरायो जाए हे . मानो यी दोई रसोई की संजीवनी बूटी हों, जो हर भोजन के बचाने वास्ते चली आये हे .

अब संत-महात्मा भी इनकी बुरई मे पीछे नी हे . वी के हे– प्याज-लसुन मत खाया करो, यी तामसिक हे. तामसिक, को मतलब यी प्याज लसुन तमारे गुस्सा वालो, असंयमी अने उग्र बनाई दे. संत म्हात्मा को केणो भी शायद सही हो – उनने कोई गृहस्थ की पत्नी खे बिना प्याज-लसुन वालो भोजना बनाते देखी लियो होगो, अने फिर पति को चेहरो भी देखियो होगो. तामसिकता केमे थी, यी वी ही भोत अच्छा से जानता होयेगा .

केहे, प्याज-लसुन खाना से गुस्सो आये हे . म्हारी घरवालि जब से प्रवचन सुनने लगी हे, तब से उनने फरमान जारी करियो अबे प्याज-लसुन घर में नी आएगा!अब जदे मे कदी प्याज लसुन खाने में ओको ज़िक्र करि दू हूँ, तो वो गुस्सो करि के बोले प्याज-लसुन खाना से गुस्सा आये हे ! अब मे सोचु हूँ, कदी गुस्सो प्याज-लसुन से आये हे, तो फिर घरवाली ने बिना खाए ही गुस्सा को इतरो अभ्यास कसे करि लियो ? बेचारा प्याज-लसुन भी सोचता होयेगा कोई की नोकरी छीनी नी, ना कोई की सरकार गिरई, फिर भी बदनाम हमारे क्यों करो हो !

हा सरकार से याद आयो प्याज़ ने सरकार तो कई बार गिरई दी. महंगई बढ़ाना मे प्याज को योगदान अविस्मरणीय रे हे. सावन हो या चातुरमास इन महीना मे प्याज लसन बंद करियो जाए हे. ऊना टेम तो असो लगे जसे भोजन को रस खत्म हुई गयो. मने म्हारा मित्र के बोलियो चल आलुबड़ा खाये उनने अपना कलेजा पे भोंटो रखी के बड़ा दुखी मन से बोलियो दादा अभी सावन चली रया. मने बोलियो थारा सावन के इना प्याज लसन ने कई बिगड़ियों जो बंद करि रखिया? उनका पास एको कोई जवाब नी थो. बस उसके तामसिक बोली के बंद करि दियो. अब तम सावन मे गुस्सो करना गाली देणो नी छोडो सबका का सब इन बापड़ा प्याज लसुन के बंद करि के अपना आपके भक्त शिरोमणि बनने को चलन रे हे बस ओर कई नी.

प्याज लसुन की हालत वसी हे जसे कोई ईमानदार अफ़सर की हो – काम सबको करे हे, पण दोष अकेला झेले हे . कढ़ाई में जसे ही पड़े इतरी खुशबू फेलाय हे कि पड़ोसी अई के पूछी ले हे कई खास बनी रयो हे ? बापड़ा प्याज-लसुन का औषधीय गुण होनो खे इतरो अनदेखो करे जे जसे कोई सर्वगुणसम्पन्न बहू में सास खाली बुरई ही देखे हे .

अब वैज्ञानिक होनो भी प्याज लसुन का समर्थन में उतरी आया हे . के हैं – प्याज-लसुन शरीर का लिए फायदेमंद हे. कोलेस्ट्रॉल घटाए हे , दिल मजबूत करे हे, अने रोग होनो से लड़ने की शक्ति बढ़ाए हे .

पण धर्म अने विज्ञान में हमेशा से लड़ाई रे हे . विज्ञान के हे – खाओ, धर्म के हे – छोडो, अने गृहस्थ बीच में फ़सी के बोले हे कुछ दिन खई भी लो, कुछ दिन छोडी भी दो, ताकि दोई की कृपा बनी रे हे .

प्याज-लसुन को विरोध वा से शुरू होये हे , जा तर्क समाप्त हुई जाए हे अने स्वाद की राजनीति शुरू हुई जाए हे .

बिना प्याज-लसुन वालो भोजन नी खाने अने बनाने वाली गृहिणी खे समाज मे 'सात्त्विक देवी' के हे, अने जो थोडो - सो तड़का डाली दे हे, वो 'भोगी' घोषित हुई जाए हे . मानो जीवन को मोक्ष इसपे पे टिकियो हे. तमने तड़को प्याज से लगायो हे या हींग से. फिर भी, इन दोई की लोकप्रियता को आलम यो हे कि तेवार वाला दिन भी लोग इनका विकल्प ढूंडी ले हे. भोजन बिना प्याज-लसुन के बनियो हो, तो ऊपर से प्याज डाली दो मसालो डाली दो! यानी मना करने पे भी इनकी उपस्थिति बनी रे हे .

कदी-कदी असो लगे हे , प्याज-लसुन सच में बोलि सकता, तो वी जरूर बोलता

भई होनो! हमारे तामसिक केना से पेला ज़रा अपना मन की तामसिकता भी देखी लो, हम तो बस सब्ज़ी होनो में जान डाला हाँ, आत्मा में नी ! हम प्याज अने लसुन, जिनसे दुनिया या तो प्रेम करे हे या दूरी बनाए रखे हे . कोई हमारा मंदिर में आने नी दे, पण हर रसोई में हमारी आरती उतारी जाए हे. कोई के हे तम तामसिक हो, तो कोई के हे तम तो स्वाद का देवता हो! हमारो अपराध बस इतरो हे कि हम हर व्यंजन के ज़िंदा करि दा हा.

हमारी गंध से लोग होनो नाक सिकोड़े हे, पण हमारी अनुपस्थिति में भूख भागी जाए हे . हमारा के काटते टेम आँसू हिटे हे- अने लोग समझे हे कि हम रुलावा हाँ ! अरे जनाब, हम तो खाली या याद दिलवा हा कि स्वाद पाने वास्ते थोडो रोना भी पड़े हे.

हमारी कहानी याज हे – कदी संत हमें छोड़ने को बोले हे, तो रसोइए हमारा के गले लगाए हैं. कोई हमें अशुद्ध के , तो कोई औषधि. कोई के अच्छा लगा हा, कोई के बुरा – बस हम तो स्वाद का साधक हा. तो कदी तमारे अगली बार कोई के की –

प्याज-लसुन मत खाओ, तामसिक बनी जाओगा, तो उनसे बस इतरो कोजो –

महाराज, कदी स्वाद में तामसिकता हे, तो फिर भोजन में सात्विकता को आनंद कुन लेगो ? हम तो बस योज केणो चावा स्वभाव मे सात्विकता रखोगा तो भोजन मे प्याज लसुन खाओगा तो भी सात्विकता बनी रेगी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी